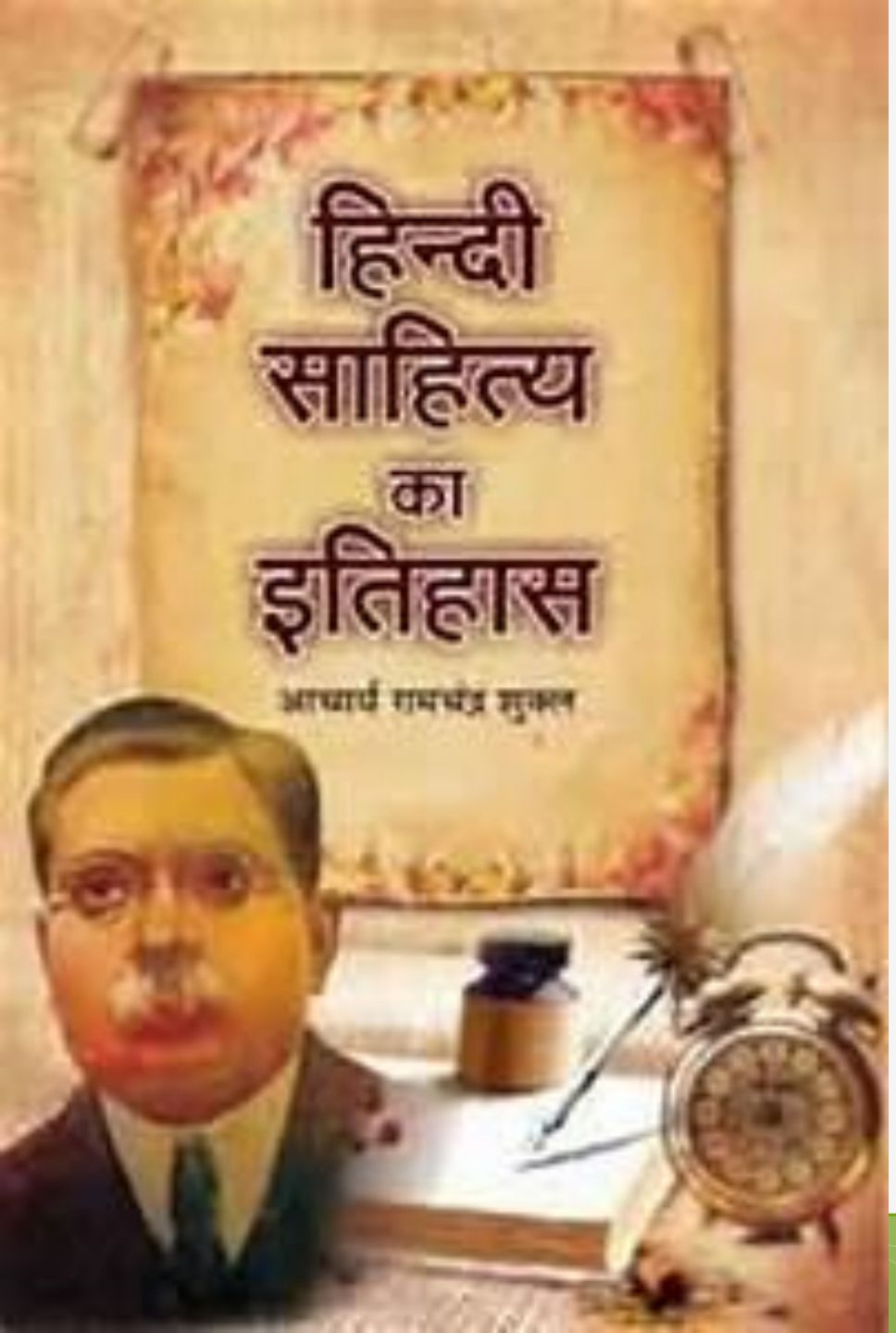

हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा

प्रस्तुतकर्ता
डॉ दीपा श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग,पटना वीमेन्स कॉलेज,पटना

हिंदी साहित्य का इतिहासः पुनर्लेखन की आवश्यकता के कारण

- साहित्य चेतना के निरंतर विकास और नए नए शोध परिणामों के कारण पूर्ववर्ती निर्णय और निष्कर्षों में बदलाव
- बदलते युगबोध के कारण परिप्रेक्ष्य, प्रविधि, प्रक्रिया आदि में परिवर्तन
- साहित्य के पूर्व रूपों के मूल्यांकन पर नए रूपों का प्रभाव
- इन्हीं कारणों से साहित्य के इतिहास का पुनरावलोकन अनिवार्य

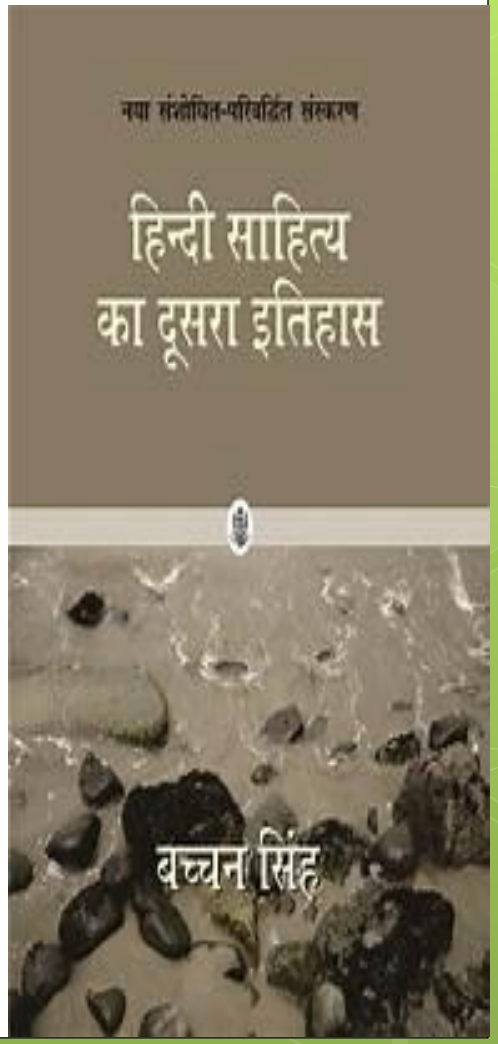

हिंदी का स्वरूप विस्तार

- भारत के जितने भूभाग में वर्तमान हिंदी सामाजिक व्यवहार तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति की माध्यम भाषा है,वह सब हिंदी प्रदेश है।
- हिंदी की अनेक शाखा प्रशाखाएँ भी हैं,जैसे-मैथिली,अवधी,ब्रज आदि।
- इन सबका अपना पृथक अस्तित्व है,लेकिन इनके साहित्य का इतिहास आदिकाल से ही हिंदी साहित्य से जुड़ा रहा है।
- ये सभी भाषाएँ हिंदी साहित्य का ही अंग हैं।

आदिकालीन जिन रचनाओं के भाषिक रूप हिंदी की उपभाषाओं के भाषिक रूपों से अभिन्न हैं,उन्हें हिंदी के अंतर्गत ही मान लेना चाहिए।

इतिहास के संदर्भ में साहित्य की सीमा

- साहित्य के अंतर्गत रस और ज्ञान दोनो के साहित्य का अंतर्भाव अपेक्षित
- ज्ञान-विज्ञान के ग्रंथों को साहित्य के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता लेकिन विकास परंपरा में उनकी उपेक्षा भी नहीं की जा सकती
- इतिहासकार को विवेक का प्रयोग करते हुए रस के साहित्य को प्रधान बनाकर ज्ञान के साहित्य का आकलन उसके पोषक रूप में करना चाहिए।

आधार स्रोत और मौलिकता का प्रश्न

- इतिहासकार को यथासंभव असंदिग्ध प्रामाणिकता वाली सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।
- समीक्षा एवं मूल्यांकन में मौलिक की जगह समन्वयात्मक दृष्टिकोण और संतुलित विवेचन अधिक महत्वपूर्ण

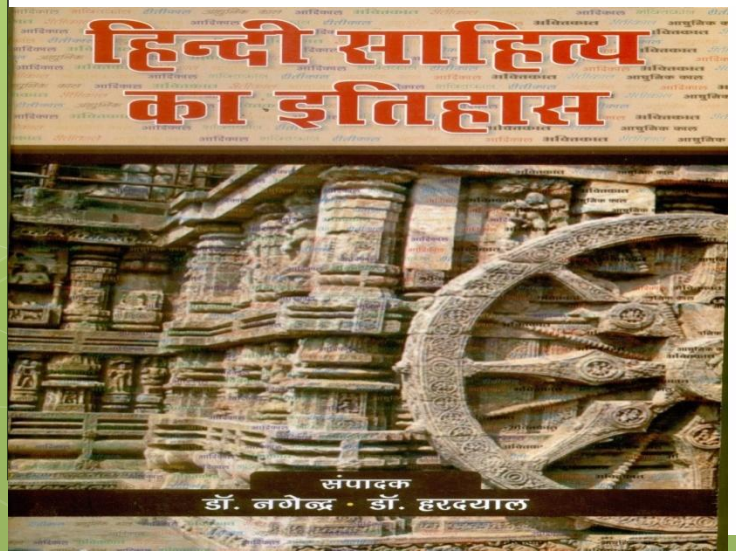

निष्कर्ष

- नवीन अनुसंधानों और विकसित साहित्य -चेतना के कारण हिंदी साहित्य के इतिहास का पुनर्लेखन आवश्यक
- यह कार्य कुछ लेखकों के समवेत प्रयास से हो सकता है।
- एतिहासिक दृष्टि और आलोचना शक्ति से यक्त एक लेखक भी यह कार्य कर सकता है।
- साहित्य चेतना के विकास क्रम का आकलन सहित्यिक प्रतिमानों के आधार पर करना हिंदी साहित्य के नए इतिहास का लक्ष्य होना चाहिए।
- प्रामाणिक लेखकों के प्रामाणिक मतों को ही ग्रहण करना चाहिए।
- साहित्य परंपरा के साथ प्रमुख रचनाकारों और उनकी रचनाओं के योगदान भी साहित्य के इतिहास में महत्व रखते हैं।
- जोवन -वृत्त तथा ग्रंथ विवरण साहित्यिक विवेचन से पूर्व देना चाहिए।
- उचित मूल्यांकन हेतु पूर्व योजना एवं रूपरेखा अनिवार्य
- ईस्वी सन् का प्रयोग उचित
- नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा वृहत् इतिहास की योजना
- हिंदी साहित्य के कुछ प्रामाणिक इतिहास शीघ्र ही उप्लब्ध हो सकेंगे।

Bonjour